HISTORY (B) (J) Hons Part II , Paper II

Economic Causes of the Revolution (राज्यक्रांति के आर्थिक कारण)

1789 ई० की फ्रांसीसी राज्यक्रांति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण आर्थिक था। यदि राजा के समक्ष एक भयंकर आर्थिक संकट उपस्थित नहीं हुआ होता तो शायद वह कुछ दिनों तक स्वयं प्राचीन व्यवस्था के अनुसार फ्रांस का शासक बना रह सकता था। लुई सोलहवें ने उस दशा को सुधारने के असफल प्रयत्न किये और अन्त में नए कर लगाने के लिए इस्टेट्स जनरल को भी आमंत्रित किया, जिसके कारण परिणामस्वरूप क्रांति का सूत्रपात हुआ।

फ्रांस के राजाओं की फिजूलखर्ची तथा लुई चौदहवें के लगातार युद्ध के कारण शाही कोष खाली हो गया था। उसकी मृत्यु के बाद लुई पन्द्रहवाँ उसका उत्तराधिकारी हुआ, जिसने पोलैंड के उत्तराधिकार युद्ध, आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध में भाग लिया। लुई पन्द्रहवें के बाद लुई सोलहवाँ ने अमेरिकी स्वातंत्र्य संग्राम में भाग लिया जिससे उसकी आर्थिक दशा अत्यंत खराब हो गई। तत्कालिन फ्रांस की आर्थिक व्यवस्था के लिए निम्नांकित कारण जिम्मेवार थे —

(i) दोषपूर्ण अर्थ-विभाजन :- आर्थिक दृष्टिकोण से फ्रांस का विभाजन असमानता के आधार पर था। फ्रांस में अधिकतर दो प्रकार के लोग रहते थे - धनी और दरिद्र। राज्य के समस्त उच्च पदों पर कुलीनों का अधिकार था। समय पड़ने पर ये लोग धन तथा सेना से राजा की सहायता करते थे। फ्रांस की लगभग आधी भूमि के ये स्वामी थे। साथ राज्य-करों से बिल्कुल मुक्त पादरीवर्ग भी अपने कर्तव्य की उपेक्षा करता था। ये लोग धार्मिक कृत्यों की परवाह न कर दिन-रात भोग-विलास में लिप्त रहते थे तथा दरबार में षड्यंत्र रचते थे। अतः साधारण जनता उच्चवर्गों से अत्यंत दुःखी थी तथा उनके अत्याचारों से अपने को मुक्त करना चाहती थी।

एक ओर तो अमीरवर्ग दरिद्रों पर अत्याचार कर अपने विशेषाधिकारों का दुरुपयोग कर रहा था तथा दूसरी ओर गरीब जनता अत्याचारों की चक्की में पिस रही थी। राज्य के प्रति, चर्च के प्रति, जागीरदारों के प्रति कर देने में उनलोगों के परिश्रम से अर्जित लगभग अस्सी प्रतिशत धन निकल जाता था तथा अत्यंत दरिद्रतापूर्ण अवस्था में ~~अधिक लोग~~ गरीब लोग अपना तथा अपने परिवार का पालन करते थे।

(ii) बजट का अभाव :- फ्रांसीसी वित्तीय नीति का एक अन्य गम्भीर दोष बजट का अभाव था। बजट के अभाव में राज्य का आय-व्यय का लेखा-जोखा भी ठीक से नहीं रखा जा सकता था। राजा राजकोष धन को व्यक्तिगत धन समझकर मनमाने तरीके से खर्च करते थे। ऐसी परिस्थिति में देश की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था।

(iii) दोषपूर्ण कर प्रणाली :- किसी भी देश की आय का प्रमुख स्रोत कर (tax) होते हैं। फ्रांस में कर व्यवस्था अत्यंत दोषपूर्ण थी। कर दो प्रकार

के होते थे - प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष कर व्यक्तिगत सम्पत्ति, आय व जागीर पर देने पड़ते थे, किन्तु अधिकांश कर ऐसे थे जिनसे सामन्त एवं चर्च के अधिकारी आदि जो कि विशेषाधिकार वर्ग में आते थे, मुक्त थे, अतः करों का सारा बोझ गरीब जनता पर पड़ता था। कितने आश्चर्य की बात है कि जो कर देने में सक्षम था उससे कर देना नहीं पड़ता था और जो भूखे पेट थे, उनसे शरीर की हड्डियाँ भी मांगी जाती थी। यही कारण है कि उस समय फ्रांस में कहा जाता था, "सामन्त युद्ध करते हैं, पादरी पूजा करते हैं तथा जनता कर देती है।"

फ्रांस में उस समय अनेक अप्रत्यक्ष कर भी थे। अप्रत्यक्ष कर वसूलने का कार्य सरकार द्वारा नहीं किया जाता था। अपितु कर वसूलने के कार्य का ठेका दे दिया जाता था। इन ठेकेदारों का उद्देश्य लाभ कमाना होता था, अतः वे अधिक से अधिक कर के रूप में वसूलने का प्रयत्न करते थे। इसी कारण हेजन ने लिखा है "कर वसूल करने की यह प्रणाली प्राचीन तथा आधुनिक युग में दोनों में ही अत्यंत घृणित प्रमाणित हुई।" फ्रांस में 18 वीं शताब्दी में अनेक अप्रत्यक्ष कर इस प्रकार के थे, जो कि जनता के लिए अत्यंत कष्टप्रद थे। इसी प्रकार का एक कर नमक कर (Salt tax) था। इसके अन्तर्गत सात वर्ष से बड़े व्यक्ति को वर्ष में कम से कम सात पौण्ड नमक खरीदना आवश्यक था। जिन गरीबों के पास रोटी खरीदने के पैसे नहीं थे, वे नमक कहाँ से खरीदते। न खरीदने की स्थिति में उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था। इसी प्रकार की दूषित कर प्रणाली शराब के लिए भी थी। उल्लेखनीय है कि नमक एवं शराब पर भी कर सम्पूर्ण फ्रांस में एक समान न थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यवस्था के समान फ्रांस का आर्थिक ढाँचा भी असमानता, विशेषाधिकार, स्वेच्छाचारिता और अन्यायपूर्ण नीतियों से ओत प्रोत था। नियम प्रायः परिवर्तित होते रहते थे, जिससे सदैव अनिश्चितता बनी रहती थी। अतः फ्रांस की जनता द्वारा इस उत्पीड़न एवं अन्यायपूर्ण वित्तीय नीति का विरोध करना स्वाभाविक ही था।

15.7.2020